कुल पृष्ठ संख्या–32 (कवर पेज सहित) क्रम संख्या 2897010

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

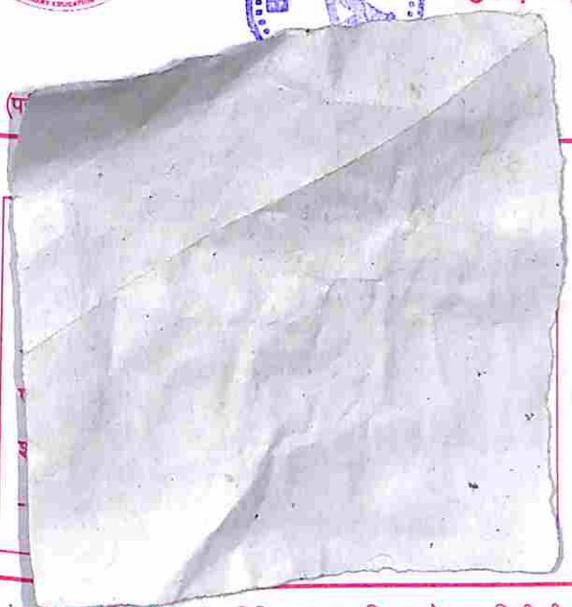

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1	9	19	4
2	4	20	4
3	8	21	
4	1½	22	
5	1½	23	
6	1½	24	
7	1½	25	
8	1½	26	
9	1½	27	
10	1½	28	
11	1½	29	
12	1½	30	
13	1½	31	
14	1½	योग	56
15	1½	प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16	3	अंकों में	शब्दों में
17	3	56	[illegible]
18	3		

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी

विषय कृषि जीव विज्ञान

परीक्षा का दिन शनिवार

दिनांक 16-4-22

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

परीक्षक के हस्ताक्षर .... संकेतांक 36278

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. ईको मैपलिथो कागज ही उपयोग में लिया गया है। 168/2021

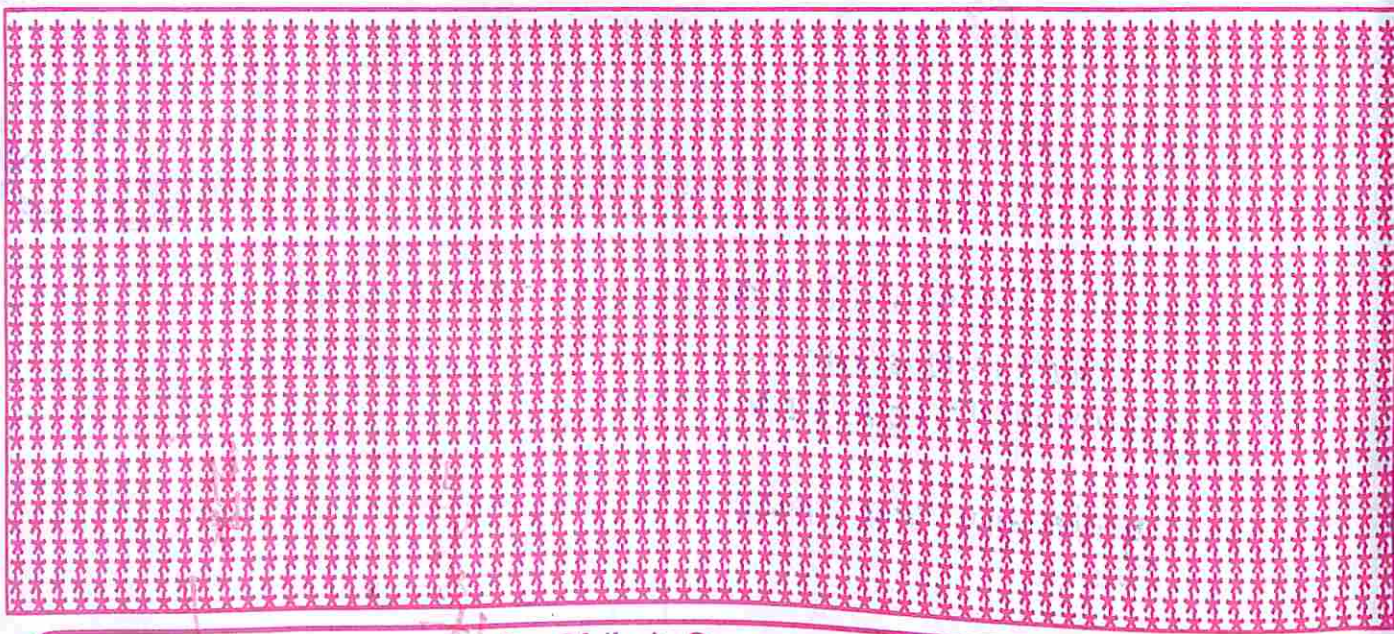

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   - (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   - (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   - (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   - (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   - (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(9)

1\. (i) (स) 11. मि. मी.

(ii) (ब) बाजरा

(iii) (अ) वैक्समैन 1944

(iv) (द) टर्मिटिड़ी

(v) (ब) लेड़ी बर्ड बीटल

(vi) (ब) गुलाबी सूंड़ी कीट

(vii) (द) 2

(viii) (अ) तबीजी, अजमेर

(ix) (स) मोर्गन

(8)

---

(4)

2\. (i) परपोषी की कोशिकाओं की संख्या बढ़ने से हुई उद्‌वृद्धि को अतिवर्द्धन कहते है।

(ii) टिड्डा आर्थोप्टेरा वर्ग का सदस्य है।

(iii) पौधों में नाइट्रोजन स्थिरीकरण को बढ़ाने वाला नीफ जीन है।

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(iv) परपरागित फसलों में सुधार की सबसे पुरानी विधि प्रतीप संकरण है।

8

3. (i) भिण्डी में पीत शिरा मोजेक रोग रोधी किस्मे — पंजाब - 7, पंजाब पदमिनी

(ii) सूत्रकृमि का पाचन तंत्र मलाशय, गुदाद्वार, आंत, मुख, ग्रसिका आदि से मिलकर बनता है।

(iii) टमाटर के पर्ण कुंचन रोग के कारण पत्तियों का कप आकार में मुड़ना तथा किनारो से झुलसी हुई नजर आना।

(iv) रेगिस्तानी टिड्डी - सिस्टोसर्का ग्रीगेरीया

(v) खरीफ की फसलों के कीट - कातरा, सफेद लट तथा खरीफ का दीडा आदि।

(viii) वाई. ए. सी (Y.A.C) → यीस्ट कृत्रिम गुणसूत्र

~~(vii) जिस पादप के कोशिका में वांछित जीन के लिए बाहरी DNA DNA उपस्थित होता है~~

(vi) किसी पादप कोशिका में वांछित लक्षण के लिए बाहरी DNA का प्रवेश कराया जाता है, उसे ट्रांसजेनिक पादप कहते है।

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(viii) धान का प्राथमिक उद्गम केंद्र – भारत है।

4. स्लग के लक्षण निम्न है –
(i) स्लग उभयलिंगी जीव होते है।
(ii) इनका शरीर पतला पीछे से नुकीला होता है।
(iii) इनके सिर पर दो जोड़ी स्पर्शक होते है जिनके शीर्ष पर काली नेत्र पायी जाती है।
(iv) यह रात्रिचर शलभ व शाकाहारी होते है।

5.

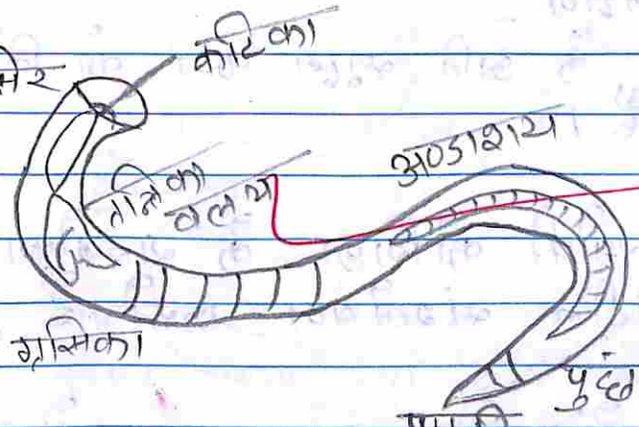

चित्र: सूत्रकृमि संरचना।

6. पादप महामारी का उभाशय जो सम्पूर्ण क्षेत्र में विनाशकारी रूप से फसलो को नष्ट कर देता है यह किसी मौसम या समय अन्तराल में हो सकता है। महामारी के कारण पादपो की कई प्रजाति को अधिक हानि पहुँचती है। इसमे संक्रामक रोगजनक पौधो को नष्ट कर देते है।
उदाहरण (i) नींबू का कैंकर रोग (ii) भिण्डी पीत शिरा मोजक रोग (iii) बाजरे का अर्गट रोग

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
1½	7.	आद्य जीवाणु विशेष परिस्थितियों जैसे गर्म झरनों, लवणीय क्षेत्रों, अम्लीय क्षेत्रों तथा ज्वाला मुखी में पाए जाते है। यह जीवाणु विशेष प्रकार के होते है इनमें कोशिका भित्ती पेप्टीडोग्लाइन की नही बल्कि स्यूडोम्यूरीन की बनी होती है। मेथेनोजन जीवाणु दलदली क्षेत्रों व गाय व भैंस की आंतो में पाए जाते है। यह गोबर से मिथेन गैस निकलने के लिए उत्तरदायी होती है।
1½	8.	विषाणु के लक्षण - (i) विषाणु के अति सूक्ष्म कण को विरियोन कहते है। (ii) विषाणु परपोषी कोशिका के राइबोसोम के द्वारा प्रोटीन संश्लेषण करते है। (iii) विषाणु में न्युक्लिक अम्ल (या तो RNA या DNA दोनो साथ कभी नही) के बने होते है। (iv) न्यूक्लिक अम्ल संक्रमण कारी तथा प्रोटीन सुरक्षा कवच का कार्य करता है। यह अकशेरुकी होती होते है।

BSER 168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

9.

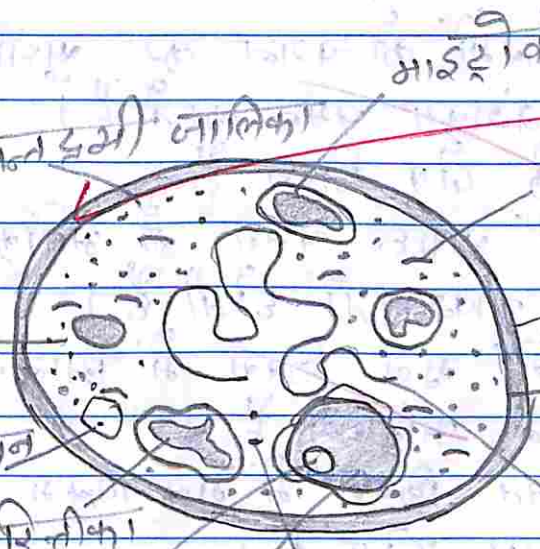

चित्र : कवक कोशिका

10. (i) पादप उत्तक संवर्धन से कृषि में आनुवांशिक लक्षणों में सुधार हुआ है।

(ii) पादप उत्तक संवर्धन से कृषि की कई पद्धतियों में सुधार आया तथा कृषि में फसलों में अनुकूलन बढ़ा है।

(iii) कृषि द्वारा प्राप्त उत्पाद के गुणों में सुधार हुआ है।

12. शुद्ध वंशक्रम :- इस विधि का प्रतिपादन निल्सन ऐहिल ने 1903 में किया। इसमें पादपों की जातियों को चयन कर कर सुधार करने से पूर्व सुधार होता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उन्नत किस्मों को चयन कर सुधार किया जाता है, शुद्ध वंशक्रम चयन कहते है।
इसके दोष निम्न है -
(i) इसमें समूह चयन से अधिक समय, धन, श्रम की आवश्यकता होती है।
(ii) इसमें मूल किस्म में आनुवांशिक विविधता होना अनिवार्य है।
(iii) उन्नत किस्म में मूल किस्म की अपेक्षा कम सुधार होता है।

13. असुगुणिता :- जिन पादप कोशिकाओं में द्विगुणित गुणसूत्र कायिक गुणसूत्रों की संख्या में एक या एक से अधिक कमी या वृद्धि होती है, असुगुणिता कहलाती है।
जैसे - $2n-1$, $2n+2$

पादप प्रजनन में उपयोग -
(i) विदेशी जातियों का संक्रमण, देशी किस्मों से कराया जाता है जिससे पादपों में सुधार हुआ है।

14. प्रतीप संकरण विधि के गुण :-
(i) यह सस्ती, सुगम व वैज्ञानिक विधि है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(ii) नई प्रभेद में कृषि कार्य के परीक्षणों की आवश्यकता नहीं होती है।

(iii) नई प्रभेद को किसान तुरन्त ग्रहण कर लेते है क्योकि यह इनकि जानकारी में होती है।

(iv) इसमे प्रत्येक पीढ़ी में 10- 100 पौधो की आवश्यकता पड़ती है।

3/3

1½ 15. उत्परिवर्तन :- किसी जीन के किसी लक्षण में आकस्मिक व वंशानुगत परिवर्तन को उत्परिवर्तन कहते है।

यह दो प्रकार के होते है।

(i) स्वतः उत्परिवर्तन (ii) प्रेरित उत्परिवर्तन

(i) स्वतः उत्परिवर्तन :- वह उत्परिवर्तन जो उत्परिवर्तजन के उपचार के बिना उत्पन्न होते है। स्वतः उत्परिवर्तन कहते है। (10^{-7} - 10^{-4} प्रति जीन प्रति पीढ़ी) दर होती है।

(ii) प्रेरित उत्परिवर्तन :- वह उत्परिवर्तन जो, रसायनिक व भौतिक उत्परिवर्तजन के उपचार के उत्पन्न होते है प्रेरित उत्परिवर्तन कहते है।

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

11.

Ti प्लाज्मिड

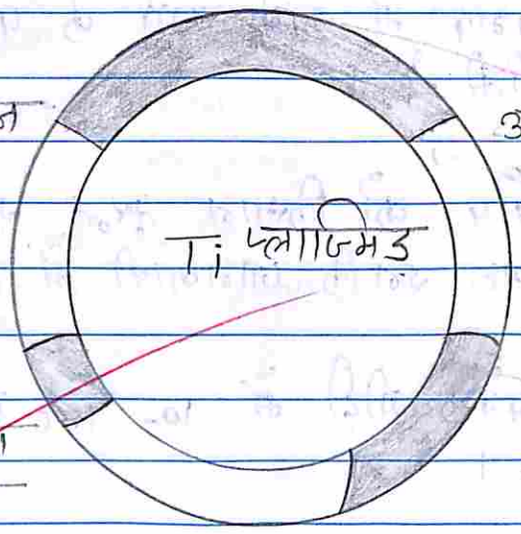

16. घोंघा के लक्षण निम्न है।

(i) घोंघा रात्रिचर शलभ, शाकारी शाकाहारी जन्तु होता है।

(ii) इसके सिर पर दो जोड़ी स्पर्शक पाए जाते है जिसके शीर्ष लम्बाई के शीर्ष पर नेत्र होते है।

(iii) इसका शरीर, सिर, पाद, प्रवाद व अतिकांग आदि मे बना होता है।

(iv) इसके शरीर पर कठोर आवरण पाया जाता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(v) इसमें रक्त संस्थान तथा श्वसन के लिए गिल या टिनीडियम होते है।

(vi) ये उभयलिंगी होते है।

(vii) यह खण्डहीन व त्रीस्तरीय होते है।

1+1+1

17. बाजरा का अरगट चेपा रोग -

इसका रोगकारक - क्लेविसेप्स फ्यूजीफोर्मिस नामक कवक से होता है।

लक्षण :- इसके लक्षण पुष्पा अवस्था के समय पौधो पर दिखाई देते है। इसके आधार पर इन्हे दो भागों मे बाटा गया है।

(i) मधु बिन्दु अवस्था :- सर्वप्रथम बालियो पर छोटी-छोटी गुलाबी शहद के रंग की द्रवीय पदार्थ की बूंदे दिखाई देती है जो बालियों पर चिपचिपे पदार्थ के रूप में फैल जाती है जो भूरे रगं में परिवर्तित हो जाती है। इस कारण इसे 'चेपा' रोग भी कहते है।

~~(ii) मधु बिन्दु अवस्था :-~~

(ii) स्क्लेरोशिया अवस्था :- मधु बिन्दु अवस्था के लगभग 10 दिनों बाद

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

बालियों में दानों के स्थान पर गहरे भूरे से काले रंग के स्क्लेरोशिया बन जाते है।

रासायनिक प्रबन्धन :-

(i) रोग होने पर कवकनाशी का छिड़काव करना चाहिए। थाइरम (0.25), कार्बोक्सीन (0.25), कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (0.1) तथा प्रोजीकोनाजोल (0.1%) का छिड़काव प्रति हेक्टेयर की दर से करना चाहिए।

(ii) कार्बोक्सीन 4 (0.25) तथा थाइरम (0.1) का छिड़काव खड़ी फसल में 10 से 15 दिन के अन्तराल में करना चाहिए।

18. फटका कीट → सिस्टोसर्का ग्रीगेरिया

प्रबन्धन →

(i) शस्य प्रबंधन :- (i) रात्रि के समय या सूर्योदय से पूर्व आग फेकने वाले यन्त्र से टिड्डो को नष्ट कर देना चाहिए।

(ii) अण्डो के प्रस्फुटन काल से पहले इनके अण्डो को नष्ट कर देना चाहिए।

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

जैविक प्रबंधन –

(i) इनको नियंत्रण करने के लिए नीम की नीम्बोली शत (5%) तथा नीम का तेल 0.1% के दर से फसलों पर छिड़काव करना चाहिए।

(ii) प्रतिरोधी किस्मों की बुआई करनी चाहिए।

रसायनिक प्रबंधन :- (i) रसायनो जैसे – केप्टान (0.25), थाइरम (0.1) का छिड़काव करना चाहिए।

(ii) टिड्डों के रास्ते में सी. जी. डी. सी (डाइ ब्रोमाइड मिथोएड) को चारे और तथा परपोषी पर डाल देना चाहिए जिससे टिड्डे इन्हे खाकर मर जाए क्योकि इनमे विष मिला होता है।

1+1½+1½

19. मूँगफली के पर्ण चित्ती (टिक्का) रोग –

रोगकारक :- स्कोस्पोरा अरेकीडिकोला व स्कोस्पोरिडियम परसोनेटम मृदा व बीज जनित कवक से होता है।

लक्षण :- इसमे लक्षणों को दो प्रकार में बांटा है।
(i) अगेती पत्ती धब्बा (ii) पछेती पत्ती धब्बा

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर		
		लक्षण	अगेती पत्ती धब्बा	पछेती पत्ती धब्बा
	(i)	धब्बे उत्पन्न होने का समय	धब्बे जल्दी उ-प सप्ताह में उत्पन्न हो जाते है। इस लिए इन्हे अगेती पत्ती धब्बा कहते है।	धब्बे 4-6-8 सप्ताह में उत्पन्न होते है इसलिए इन्हे पछेती पत्ती धब्बा कहते है।
	(ii)	धब्बो का आकार	यह अनियमित आकार के होते है।	यह गोलाकार होते है।
	(iii)	रंग एवं पीला घेरा	इसमे धब्बो का रंग लाल-भूरे से काला होता है धब्बों के चारो ओर पीला घेरा होता है।	रंग गहरे भूरे से काला होता है तथा पीला घेरा नहीं होता।
	(iv)	संख्या व आकार	यह कम व 1-10 मिमी के होते है।	यह ज्यादा तथा 1-6 मिमी. आकार के होते है।
	(v)	हानिकारक प्रभाव	यह कम हानिकारक होते है।	यह ज्यादा हानिकारक होते है।
	(vi)	रोगकारक	स्कोस्पोरा अरेकीडि कोला	स्कोस्पोरिडियम परसोनेटम

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्रबंधन :

शस्य प्रबंधन – (i) ग्रीष्म कालीन गहरी जुताई करनी चाहिए।

(ii) मूंगफली की अगेती बुआई करनी चाहिए।

(iii) रोग मुक्त बीजो का प्रयोग करना चाहिए।

(iv) मृदा का सौर्यकरण करना चाहिए।

जैविक प्रबंधन → (i) स्यूडोमोनास फ्लोरसेन्स व ट्राइकोडर्मा कल्चर से बीजो को उपचारित करना चाहिए।

(ii) प्रतिरोधी किस्मो VRI – 3 आदि की बुआई करनी चाहिए।

रासायनिक प्रबंधन :

(i) कवकनाशी रसायनो का प्रयोग जैसे कार्बेडाजिम 5 ग्राम / हैक्टेयर तथा कार्बोफ्यूरान 2.5 ग्राम / हैक्टेयर की दर से मृदा उपचार करना चाहिए।

(ii) थाइरम (0.2%), कार्बेडाजिम (0.1%) व कॉपर ऑक्सी क्लोराइड का बुआई से पहले बीजोपचार करना चाहिए।

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

1+1+2+1+2
4

20. कातरा कीट – हैमसेक्टा मूरी
गण – लेपिडोप्टेरा
कुल – आर्कटिडी

जीवन चक्र :- इसके कीट पहली अच्छी वर्षा के बाद रात्रि में भूमि से बाहर निकलते है तथा प्रकाश-पाश की ओर आकर्षित होते है। मादा मैथुन के कुछ घण्टो बाद ही अण्डे देना प्रारम्भ कर देती है। यह अण्डे पत्तीयो के की नीचली सतह पर समूह में अण्डे देती है। इसके अण्डे पोस्त के बीज के समान होते है। यह अपने जीवन काल में 1500 तक अण्डे देती है। अण्डो से 2-3 दिन बाद गिडार निकल जाती है जो पहले पत्तयो व कोमल भागो को तथा बाद मे अकेले पूरी पत्तीयों को खाना प्रारम्भ कर देती है। गिडार खेतो व मेड़ो से निकलकर भूमि में 10-30 से.मी.मीटर की गहराई में ~~अण्डे देती है~~ कोशावस्था में बदलती है। कोषकाल 13-26 दिन का होता है तथा यह आगामी वर्षा ऋतु तक 9-10 महीने भूमि में पड़े रहते है। इसका जीवन काल 26-41 दिनों का होता है तथा वर्ष में एक से अधिक पीढ़ियां हो सकती है।

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्रबंधन :

शस्य प्रबंधन : (i) कातरा के शलभकोशात्ति में प्रकाश पाश की तरफ आकर्षित कर नष्ट कर देना चाहिए।

(ii) कातरा के अण्डो के प्रस्फुटन काल से पहले इन्हे नष्ट कर देना चाहिए।

जैविक प्रबंधन –

(i) ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई कर देने से गिडार भूमि के बाहर आ जाते है जिसे परभक्षी कीट (कौआ, मैना, बगुला) आदि द्वारा खा लिए जाते हैं।

(ii) परपोषी फसलो की बुआई के स्थान पर फसल चक्र अपनाना चाहिए।

रासायनिक प्रबंधन : (i) खेत के चारो ओर 30×30 cm के नालियां बना कर थाइरम 3% ग्राम डालना चाहिए। जिससे वह कोषावस्था के लिए जाते समय नालियो में मर जाए।

(ii) कैप्टन, थाइरम, कार्बोक्सीन आदि से मृदा का उपचार किया जाना चाहिए।

समाप्त

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-168/2021

क द्वारा त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

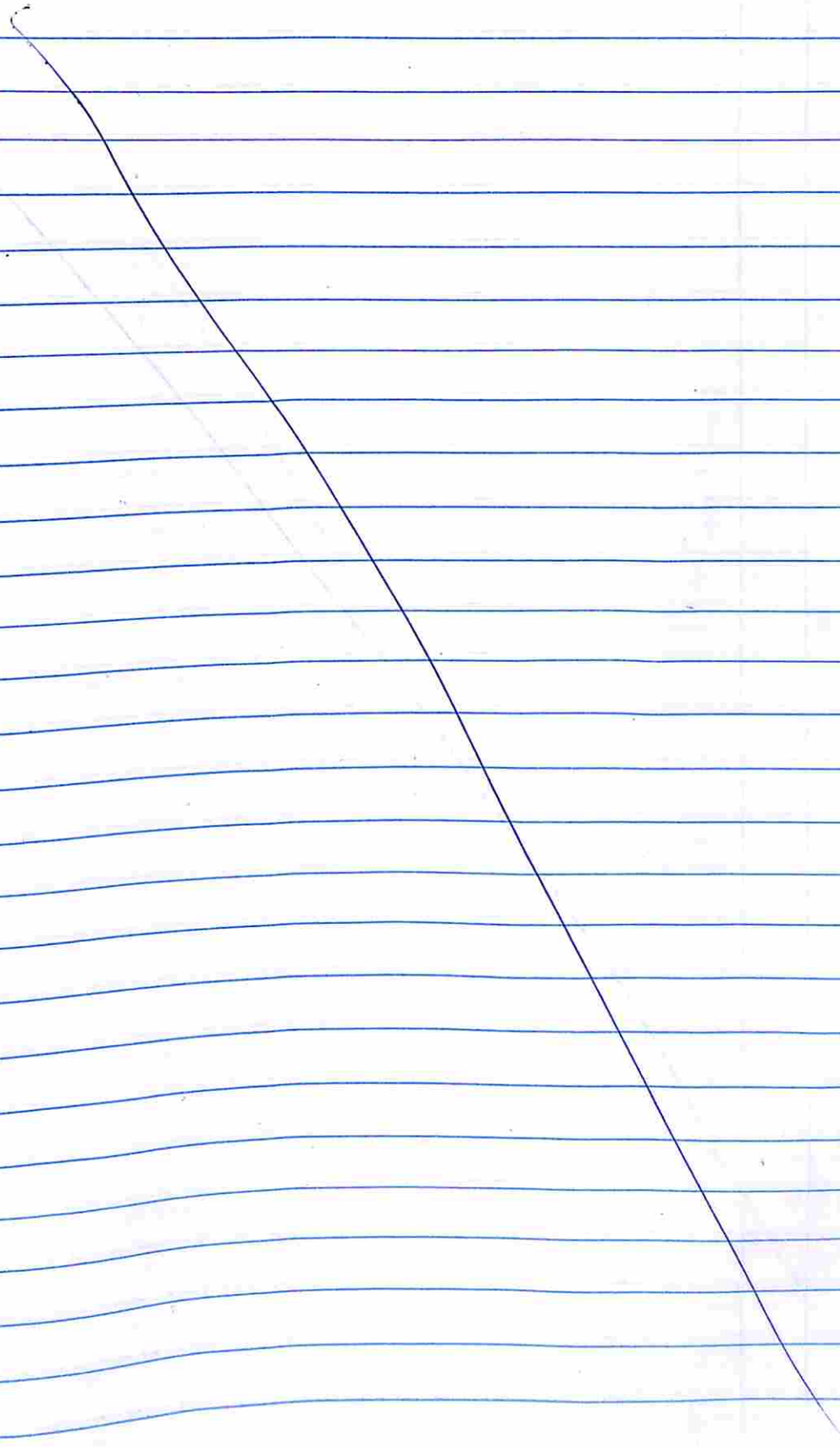

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्यां	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSEB-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-168/2021

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-168/2021